षष्ठम् अध्याय

कमलेश्वर के लघु-उपन्यासों का मूल्यांकन

'अेक सड़क सत्तावन गलियां' से लेकर 'आगामी अतीत' तक कमलेश्वरजी ने अनेक मंजिले पार की हैं। वैसे कमलेश्वरजी मूलतः कहानीकार होने के बावजूद भी अेक अच्छे लघु-अुपन्यासकार भी हैं। अुन्होंने अपने अिन लघु-अुपन्यासों में युग-सत्य को वरीयता देने की भरसक कोशिश की है। अिनके अिन लघु-अुपन्यासों में सूक्ष्मता और सांकेतिकता तथा प्रतीकात्मकता के दर्शन हो जाते हैं। आधुनिक संचेतना अुनके लघु-अुपन्यासों में विशेष रूपसे विद्यमान है। अुन्होंने अपनी ये रचनाअें परिवेश से कटकर कभी भी नहीं लिखी हैं। अुनके लघु-अुपन्यास में आम आदमी की ज़िन्दगी, राग-विराग, बनते-बिगड़ते रिश्ते, शक, आस्थाअें, गद्दारी, प्यार, नफ़रत, आर्थिक अभाव, पति-पत्नी की कलह और प्रेम आदि सब कुछ अपने यथार्थ रूप में

पाया जाता है। कमलेश्वरजी अेक खास विशेषता है कि वे अपनी हर बात को निहायत सफ़ाअी के साथ पेश करते हैं। अपने लघु-अुपन्यासों के ज़रिअे वे अेक अेक जीता-जागता चित्र पेश करने में कुशल हैं। युग-बोध और युग-सत्य को कमलेश्वरजी बड़ी खूबी के साथ पेश करते हैं। अुनके अपने अधिकांश लघु-अुपन्यासों में शहरी जीवन के निम्न मध्य वर्गका ही चित्रण मिलता है।

कमलेश्वरजी ने अपने युग की समस्याओं को अपने साहित्य में प्रधानता दी है। जीवन के यथार्थ को वे बिलकुल सहज ढंग से प्रस्तुत करते हैं। पाठकों को अुनके ये लघु-अुपन्यास पढने पर अेक खास किस्म की कचोटन का अहसास होता है।

लघु-अुपन्यास के रूप में कमलेश्वरजी की यह खासियत है कि अिनकी अिस लम्बी लघु-अुपन्यासिक यात्रासे कुछ अैसी खूबियाँ सामने आ जाती हैं जो दूसरे किसी लघु-अुपन्यासकार में नहीं हैं। अुनके ये सभी लघु-अुपन्यास सोद्देश्य हैं। जीवन के यथार्थ की सशक्त अभिव्यक्ति, समर्थ और प्रौढ भी अुनके लघु-अुपन्यासों की अन्य विशेषताअें है। वास्तव में कमलेश्वर ने सहज स्वाभाविक शिल्प और शैली को अपनाया हैं। स्वाभाविक शैली के साथ साथ वे अपनी बातों को प्रतीकात्मक ढंग से प्रस्तुत करते है।

कमलेश्वरजी के लघु-अुपन्यास मध्यमवर्गीय समाज के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा वैयक्तिक जीवन से सम्बध्द हैं। अुन्होंने अपने लघु-अुपन्यासों में छोटे कस्बों अेवं बड़े शहरों की ज़िन्दगी का सही सही चित्रांकन किया है। मिसाल के तौर पर देखिअेगा - अेक सड़क सत्ताक्न गलियाँ, डाक बंगला, लौटे हुअे मुसाफिर, तीसरा आदमी, समुद्र में खोया हुआ आदमी,

और आगामी अतीत ।

कमलेश्वरजी ने अपने लघु-अुपन्यासों मे जीवन के यथार्थ का वास्तविक चित्रण बडी कलात्मकता के साथ कर दिया है। अुनके अिन लघु-अुपन्यासों के पात्र भी ज़िन्दादिल बन पडे है। शहरी अेवं कस्बाअी वातावरण का जीवंत चित्रण अिन लघु-अुपन्यासों मे हुआ है। कमलेश्वरजी ने अपने सभी लघु-अुपन्यासों मे मानवीय पक्ष को संवेदना के स्तर पर कलात्मक के साथ अुजागर किया है। अुनकी भाषा बहुत ही प्रभावपूर्ण अेवं स्वाभाविक बन पड़ी है। अपने सभी लघु-अुपन्यासों में कमलेश्वरजी ने अुर्दू और अंग्रेजी की मिलाप-शैली को अपनाया है। सशक्त भाषा के कारण अुनके लघु-अुपन्यासों का पाठकों पर बड़ा गहरा असर हो जाता है। आकार में छोटे होने पर भी अुनके सभी लघु-अुपन्यास सफल और महान बन पडे हैं। वैसे कमलेश्वरजी अेक जागरूक लघु-अुपन्यासकार हैं।

कमलेश्वरजी ने अपने लघु-अुपन्यासों में सूक्ष्म तथा जटिल भावों और विचारों को अभिव्यक्ति दे दी है। अुनके अिन लघु-अुपन्यासों की भाषा मे आत्मीयता का बोध दिखाअी देता है। साथही साथ चित्रात्मकता के भी दर्शन हो जाते हैं। कमलेश्वरजी ने अपने अिन लघु-अुपन्यासों में 'गागर में सागर' भर देने का सराहनीय प्रयास किया है। पात्रों के चरित्र चित्रणों में तो वे अपने लघु-अुपन्यासों में बाजी मार गये अैं। 'अेक सडक सत्ताक गलियाँ' के सरनाम और बंसी, 'लौटे हुअे मुसाफिर' के सत्तार, सलमा, बच्चन और नसीबन, 'डाक बंगला' की अिरा, विमल, अतरा और डाक्टर चंद्रमोहन, 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' के श्यामलाल, हरबंस और बीरन तथा समीरा

और तारा, 'तीसरा आदमी' के मैं, चित्रा और सुमन्त और 'आगामी अतीत' के कमल बोस, चंदा और चांदनी आदि पात्रों को कमलेश्वरजी ने अपने अिन लघु-अुपन्यासों के पन्नों पर जीवंत खडा किया हैं। ये पात्र सिर्फ पात्र नहीं रह जाते, अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व भी करनेवाले पात्र हैं। अपने पात्रों को पाठकों के सामने सजीव प्रस्तुत करने में कमलेश्वरजी माहिर है। वास्तव में यही अुनकी खासियत भी है।

वास्तव में अुनके लघु-अुपन्यासों के ये पात्र विशेष रूप से स्मरणीय बन पडे है - सरनाम, सत्तार, सलमा, अिरा, मैं, चित्रा, श्यामलाल, हरबंस, बीरन, कमलबोस और चांदनी।

पात्रों के चरित्र चित्रण के साथ साथ कमलेश्वरजी के लघु-अुपन्यासों के डायलाग (कथोपकथन) भी प्रभावपूर्ण और स्वाभाविक बन पडे हैं। अिनकी वजह से ही पात्रों में ज़िन्दादिली आ पायी है। ये कथोपकथन कहीं छोटे हैं तो कहीं बडे हैं, मगर जो भी हो, अिनमें पाठकों के हृदय को झकझोरने की जबरदस्त शक्ति है। मिसाल के तौर पर देखिअेगा - 'डाक बंगला', 'तीसरा आदमी', 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' और 'आगामी अतीत' 'डाक बंगला' में अिरा के और 'आगामी अतीत' में चांदनी के डायलाग अविस्मरणीय हैं।

कथावस्तु की दृष्टि से भी अुनके लघु-अुपन्यास बेहद सफल बन पडे हैं। हर लघु-अुपन्यास की कथावस्तु की कुछ मौलिक विशेषताअें अुभरकर सामने आती हैं। कथानक सीधे ढंग से विकसित होता रहता है। अुसमें कहीं भी अवरोध नहीं दिखाअी देता। अुनके कुछ लघु-अुपन्यासों की कथावस्तु में रूमानियत भी महसूस

होती है। मिसाल के तौर पर देखिअेगा - 'डाक बंगला' और 'तीसरा आदमी' तथा 'आगामी अतीत'। अुनके अिन लघु-अुपन्यासों की कथावस्तु कस्बाअी अेवं शहरी जीवन के निम्न मध्यमवर्ग से जुड़ी हुअी दिखाअी देती है। 'सोद्देश्यता' कमलेश्वरजी के लघु-अुपन्यासों की खासियत है। 'अेक सड़क सत्तावन गलियाँ' में अुन्होंने मध्यमवर्गीय समाज के जीवन सजीव चित्र प्रस्तुत किया है। अिसमें स्वतंत्रतापूर्व अेवं स्वातंत्र्योत्तर काल के युग को अत्यन्त सूक्ष्मता के साथ प्रस्तुत किया है। 'डाक बंगला' में अिरा के माध्यम से नैतीक और सामाजिक मान्यताओं के बीच टकराहट को दिखाया गया है। 'लौटे हुअे मुसाफिर' में हिन्दुस्तान की आजादी और अुसके विभाजन के प्रभाव को अंकित किया गया है। 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' में कमलेश्वर जी ने परिवार के टूटते जाने की प्रक्रिया का अंकन किया है। 'तीसरा आदमी' में पति-पत्नी के बीच जब कोअी तीसरा आदमी आ जाता है, तो अुनके आपसी रिश्ते कैसे बिगड़ जाते है और शक की आँधी कैसी बढ़ती है, अुसका चित्रांकन हुआ है। 'आगामी अतीत' में चांदनी नामक अेक वेश्या के चरित्र को अुजागर करने का सफल प्रयास किया गया है।

..... "आधुनिक संवेदना को कमलेश्वरने अपने लघु-अुपन्यासों के माध्यम से वहन किया है। वह निर्मल वर्मा तथा आधुनिक कथाकारों की भाँति अपने परिवेश से कटकर कृत्रिम आभिजात्य में नहीं जीते। कारीडोर, कीचन, नाअिट-क्लब और बार की जिन्दगी से दूर अुनके लघु-अुपन्यासों में आम हिन्दुस्तानी की जिन्दगी ही दीख पडती है।"[1]

'अेक सड़क सत्तावन गलियाँ', 'डाक बंगला', 'लौटे हुअे मुसाफिर', 'तीसरा

आदमी', 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' और 'आगामी अतीत' कमलेश्वर की औपन्यासिक यात्रा के छः पड़ाव हैं। युग और समाज को अेक सम्पूर्ण परिवेश में प्रकट करने की लेखकीय अुत्कण्ठा के परिणाम स्वरूप लिखे अिन अुपन्यासों लघु किन्तु पूर्ण सामाजिक चित्र-फलक प्रस्तुत किया गया है। युग-बोध और युग-सत्य को कमलेश्वर ने सदैव प्राथमिकता दी है। राजेन्द्र यादव के शब्दों में - ''कमलेश्वर अपना सच नहीं बोल सकता, मगर युग और अपनी पीढ़ी का सच वह जरूर बोल सकता है। अिसके पास ज़बान है और अुसे बात करनी भी आती है। क्योंकि अिसी समय सच पर आकर बडे बडे ज़बानदार लोग चुप हो जाते हैं।''[२] .....

कमलेश्वरजी के 'अेक सड़क सत्तावन गलियाँ' से लेकर 'आगामी अतीत' तक के ये छः लघु-अुपन्यास अपने आप में अत्यन्त मौलिक और महत्त्वपूर्ण बन पडे हैं। अिनमें से कुछ लघु-अुपन्यासों पर सफल फिल्में भी बन चुकी हैं। अिन छः लघु-अुपन्यासों ने कमलेश्वरजी को श्रेष्ठ लघु-अुपन्यासकारों की पंक्ति में लाकर खडा किया है। अेक अूँचे दर्जे के लघु-अुपन्यासकार के रूपते कमलेश्वरजी हिन्दी साहित्य जगत में हमेशा स्मरणीय रहेंगे।

-

टिप्पणियाँ

१. घनश्याम मधुप - हिन्दी लघु-उपन्यास
पृष्ठ - १६१

२. घनश्याम मधुप - हिन्दी लघु-उपन्यास
पृष्ठ - १६१